

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
अंतर्गत श्री अ.भा.सा.जैन संघ, वीकानेर



प्रबोधिनी

त्रैमासिक पत्रिका



वर्ष - 1

अंक-11

17-18 अक्टूबर, 2020

आश्विन शुक्ला 2076

महावीर ताणी

आणा निद्वेसकरे, गुरुणमुववाय कारण।

इंगियागार सम्पन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ॥

जो गुरु की आज्ञा का पालन करता है, उनके पास रहता है, उनके इंगित तथा आकारों को समझता है, वही शिष्य विनीत कहलाता है।

सुधा सार

सद्गुरु की प्राप्ति दुर्लभ है। सद्गुरु की शरण मिल जाने पर भी कुवासनों से मलिन बनी हुई बुद्धि वाला शिष्य तिर नहीं सकता क्योंकि वह गुरु की उपासना करने के बजाय उनसे द्वेष की भावना रखने लग जाता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.-

शिष्य के दो रूप हैं। एक पानी का रूप दूसरा घी का रूप। पानी के तुल्य शिष्य अपने दुग्ध रूपी गुरु के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। किन्तु घी के समान शिष्य अपना प्रदर्शन चाहता है। वह दूध रूपी गुरु पर छाया रहता है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

सम्पादक पाती....

तबही गुरु प्रिय बैन कहि, शीष बढ़ी चित प्रीत।
ते कहिये गुरु सनमुखा, कबहूँ नं दीजै पीठ॥

शिष्य के मन में बढ़ी हुई प्रीति देखकर ही गुरु मोक्षापदेश करते हैं। अतः गुरु के सम्मुख रहो, कभी विमुख मत बनो। ऐसा ही किया मुनि राम ने, अपने गुरु के प्रति संपूर्ण समर्पणा, निष्ठा, श्रद्धा, भक्ति रखी और नाना गुरु ने भी कितने निरीक्षण, परीक्षण, समीक्षण के पश्चात् आत्मसाक्षी से समयोचित दूरदर्शितापूर्ण निर्णय लिया कि आज हम डंके की चोट पर कह सकते हैं कि नाना की कसौटी पर राम सौ प्रतिशत खरे उतरे। इनकी विशेषताओं की फेहरिस्त इतनी लंबी है कि एक पूरा खाका खींचा जाये तो भी कम पड़ेगा। श्रद्धेय आचार्य रामेश का जीवन एवं दर्शन व्यक्ति एवं समष्टि के लिये एक प्रेरणा है। वास्तव में आपने व्यसन मुक्ति, उत्क्रांति तथा विभिन्न आयामों की त्रिवेणी पर साधुमार्ग का एक ऐसा भव्य प्रासाद खड़ा किया है, जिसका अस्तित्व युगों-युगों तक रहेगा।

इस कोरोना काल से पूर्व ही अपनी निर्मल प्रज्ञा द्वारा आपने पूर्व में चातुर्मास नहीं खोला। ये आपका एक दूरदर्शितापूर्ण निर्णय कहें या छठी इंद्रिय



कहें। शताब्दी वर्ष को 'अनन्य महोत्सव' के रूप में मनाकर अपने गुरु को अतुल्य भावांजलि प्रदान की। बड़ी सादगी से मुमुक्षुओं को दीक्षा दी। आगामी 5 दीक्षाएँ भी घोषित कीं। ऐसे गुरु को पा हम सब निहाल हैं। इस चातुर्मास में चतुर्विध संघ में तप-त्याग की धूम मची हुई है। मैं भी अपने गुरु के लिये कुछ शब्दों की माला पिरोना चाहती हूँ

सत्यम् शिवम् सुंदरम् : मम गुरुवरम्

सत्यम् शिवम् सुंदरम्!
प्रणमामि मम गुरुवरम्!!

वाणी तव मधुरम्।
प्रवचन देते अमृतम्॥

संयम में हो अचलम्।
सिद्धांतों में भी अटलम्॥

दीक्षा प्रदाता प्रचुरम्।
आगम ज्ञाता बहुलम्॥

गढ़ते नव विधानम्।
पग-पग पुण्य निधानम्॥

सूत्रों का गहन चिन्तनम्।
नवनीत देते कर मंथनम्॥

पाद विहारी निरन्तरम्।
जन-मन होते निरञ्जनम्॥

कषायों का किया विसर्जनम्।
श्रेष्ठ हैं ये नरपुंगवम्॥

समता मूर्ति मनोहरम्।
अक्षुण्ण वृद्ध मनोबलम्॥

श्रमण संस्कृति संवाहकम्।
आभा वलय प्रभावकम्॥

निर्णय क्षमता अद्भुतकम्।
ज्ञान क्रिया उत्कृष्टतम्॥

जिज्ञासा का करते निवारणम्।
आगम का करते आराधनम्॥

कुरीति का किया उन्मूलनम्।
कथनी करनी एकरूपकम्॥

जीवन जीते स्वावलम्बनम्।
शास्त्रों का लेते आलम्बनम्॥

गुणशील समाज निर्मितम्।
किया संघ समर्पितम्॥

सत्यम् शिवम् सुंदरम्!
'वीना' प्रणमामि मम गुरुवरम्!!

प्रबोधिनी प्रबुद्धता, प्रतिबद्धता, प्रगल्भता का पर्याय बने।

इसी प्रयास में..... वीना नाहर

एक अपील

प्रबोधिनी के सुधी पाठकों से एक अनुरोध करना चाहती हूँ कि आपको प्रबोधिनी का कलेवर, पाठ्य सामग्री आदि कैसा लगता है? इसे और पठनीय कैसे बनाया जा सकता है? इस पर आप अपने अमूल्य विचार साझा करें। आपके सुझाव आमंत्रित हैं। जिसके भी सुझाव हमें अच्छे लगेंगे, उसे प्रबोधिनी के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।



आचार्य पद की गुरुता

आचार्य पद गरिमामय, गौरवमय है। उसकी गुरुता का बखान आगम करता है। यह पद ऐशो-आराम के लिये नहीं है। हुकूमत चलाने के लिये नहीं है, अपितु एक माता की तरह साधकों का संरक्षण करते हुए उन्हें सदाचार के पथ पर सुस्थिर रखना एवं सम्यग् गति देना है। मां वात्सल्य की मूर्ति होती है। यह उसके जीवन का एक पक्ष है। उसके जीवन का एक दूसरा पक्ष है। वह यह कि यथा प्रसंग उसे चण्डी का रूप भी धारण करना होता है। वह रूप भी मातृत्व का ही विरुद्ध निभाता है। आचार्य भी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति होते हैं, पर कभी-कभी उन्हें भी कड़ा रूख अख्तियार करना पड़ता है। वह कड़ा रूख भी स्व-पर हित कारक ही होता है। श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र इसका साक्षी है- **‘जं मे बुद्ध्याणसांसति सीएण-फरूसेण वा’**। इस पक्ष को पुष्ट करने वाला अन्य कथन भी है- **‘आयरियं कुवियं न नच्चा’**। आचार्य कुपित क्यों होंगे? उनका क्या स्वार्थ है? उनका एक ही ध्येय है। निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति सुरक्षित रहे। निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति सुरक्षित रहे। निर्ग्रन्थ, ग्रन्थी में नहीं उलझे। गर्गाचार्य एवं कालकाचार्य के वृत्तांत से हम जान सकते हैं कि उन महान पुरुषों ने सत्य-संयम शील सदाचार की रक्षा के लिये मान-सम्मान को पीठ दे दी। नहीं चाहिये मान। नहीं चाहिये सम्मान। उन्हें चाहिये निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा। वही है उनका सबका जीवन प्राण।

आचार्य श्री गणेश ने भी तो उन्हीं आचार्यों के आदर्श को सम्मुख रखा। ग्यारह सौ इकतालीस साधु-साध्वियों का मान-सम्मान पाता रहूँ और जो चले उसे चलने दूँ। नहीं, उन्हें ऐसा स्वीकार नहीं था। वे आंख बन्द करके जीने के पक्ष में नहीं थे। उनकी इच्छा थी। चौबीस कैरेट स्वर्ण की। भले ही वह थोड़ा ही हो। वे यह मानते थे कि **‘चंदन की लकड़ी भली, गाड़ी भरा न काठ।’** चंदन की एक लकड़ी में जो है वह गाड़ियाँ भरे काष्ठ की तुलना में कहीं अधिक है। गाड़ी भरे काठ के साथ चंदन भी जल जाये यह भला उन्हें कैसे सुहाता। उन्होंने चंदन की लकड़ी की सुरक्षा के लिये होने वाली अवमानना-तिरस्कार-असहयोग को नजर अन्दाज कर दिया। पर हाँ, वे चंदन की लकड़ी को बचाने में सफल रहे। यही उनके जीवन की जीत है। इसके लिये उन्हें कड़ियों की नाराजगी भी क्यों न झेलनी पड़ी हो, कुछ खोना भी पड़ा हो पर वे अपने मिशन में सफल रहे। ऐसे प्रसंग पर यदि आचार्य को चण्डी का अवतार भी लेना पड़े तो उसमें भी वे पीछे नहीं हटेंगे। यह आचार्य का गौरव है।

आत्मार्थी अद्भुत साधिका श्री कंचन श्री जी म.सा. को भावांजलि

युग निर्माता, निर्लिप्त अध्यात्म योगी, विश्ववन्दनीय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री कंचन श्री जी म.सा. का दुर्ग में संधारापूर्वक देवलोकगमन होने पर उन्हें अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर परम प्रतापी आराध्य देव ने शांत प्रशांत मुद्रा में चतुर्विध संघ के मध्य फरमाया कि पिछली अवस्था में संयम लेकर अपनी भावनाओं को साकार किया और जीवन का मकसद हासिल कर लिया। वे सरल स्वभावी व विनय, सेवा की साक्षात् मूर्ति थीं। गौरव की बात यह है कि पूर्ण सजगता के साथ अंतिम समय में संधारा ग्रहण कर अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण किया। वे अप्रमत्तता की अद्भुत साधिका थीं। पूर्व में एक पुत्री और पुत्रवधू के रूप में देशलहरा व बैद परिवार को अपने उत्तम गुणों से सुरभित किया। जीजी बाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। वे कर्म और धर्म में शूरवीर थी।

शासन दीपिका पूज्य श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि इंद्रिय शक्ति की बजाय आत्मशक्ति में अपूर्व आनंद है। आचार्य श्री रामेश

दया व करुणा के सागर हैं। निरंतर भव्य आत्माओं को भव पार लगा रहे हैं। आरुणबोहिलाभं की बहनों ने एक सुंदर भाव गीतिका प्रस्तुत की- **‘आ चल के तुझे, गुरु ले के चले। एक ऐसे गगन के तले। जहाँ जन्म ना हो, मृत्यु भी ना हो। बस ज्योत में ज्योत मिले।’** प्रस्तुत कर सबको भाव-विभोर कर दिया। साधुमार्गी संघ के पदाधिकारियों ने भी अपने भाव व्यक्त किये। महेश जी नाहटा ने आचार्य भगवन् को अतिशयधारी आचार्य निरूपित किया।

उपकारक भी बने तो अपकारक भी

- | | |
|----------------------------------|-------------------|
| 1. सर्प किसके लिये उपकारक बना? | - चन्दनबाला |
| सर्प किसके लिये अपकारक बना? | - कमठ |
| 2. दान किसके लिये उपकारक बना? | - नयसार |
| दान किसके लिये अपकारक बना? | - नागश्री |
| 3. लब्धि किसके लिये उपकारक बनी? | - गौतम स्वामी |
| लब्धि किसके लिये अपकारक बनी? | - गौशालक |
| 4. माता किसके लिये उपकारक बनी? | - अरणकमुनि |
| माता किसके लिये अपकारक बनी? | - अमर कुमार |
| 5. पत्नी किसके लिये उपकारक बनी? | - तेतली प्रधान |
| पत्नी किसके लिये अपकारक बनी? | - महाशतक |
| 6. कंगन उपकारक बने थे? | - नमिराजत्रयि |
| कंगन अपकारक बने थे? | - कलावती |
| 7. पराजय किसके लिये उपकारक बना? | - दशार्णभद्र राजा |
| पराजय किसके लिये अपकारक बना? | - कोणिक राजा |
| 8. जीजाजी किसके लिये उपकारक बने? | - शालीभद्र |
| जीजाजी किसके लिये अपकारक बने? | - स्कन्धकमुनि |
| 9. पति किसके लिये उपकारक बने? | - पद्मावती रानी |
| पति किसके लिये अपकारक बने? | - कलावती |
| 10. माया किसके लिये उपकारक बनी? | - महाबल मुनि |

गुरु-शिष्य

- मैंने गुरु ज्ञान के माध्यम से श्रुतज्ञान प्रवाहित कर शासन प्रभावना की? सुधर्मा स्वामी- महावीर
- जीव दया के लिये मैंने गुरु की आज्ञा पालनकर स्व का बलिदान किया? धर्मघोष- धर्मरूचि
- गुरु के एक वचन का विरोध कर मैंने अनंत संसार बढ़ाया? जमाली- प्रभु महावीर
- गुरु आज्ञा उल्लंघन से मेरी मृत्यु हुई? सुनक्षत्र मुनि- महावीर प्रभु
- लब्धि प्रयोग से हमारे गुरु ने हमको पारणा करवाया? 1503 शिष्य व गौतम स्वामी
- शिकार करने आये राजा को मैंने संयमी बनाया? गर्दभाली मुनि- संयति राजा
- गुरु दर्शन का अभिग्रह पूरा न होने पर हमने संधारा किया? 5 पांडव- नेमिनाथजी
- मैंने अपने 500 शिष्यों को एक ही दिन में मोक्ष पहुँचाया, पर मैं भटक गया? स्कन्धक आचार्य और उनके शिष्य
- मुझ पर अपने शिष्य का उपकार है? - शैलक राजत्रयि पर पंथक का
- मैंने शिष्य का मोह-जंजाल छोड़ा? - गर्गाचार्य और उनके शिष्य

गुरु की महिमा

- * गुरु समर्पणा से होते हैं कई चमत्कार
 - * गुरु ही हरता है अज्ञान का अंधकार
- * शिष्य पाषाण हैं तो गुरु कुंभकार है
 - * आतम में जोश भर देती है गुरु की ललकार
- * माँ बनकर गुरु ही बरसाते वात्सल्य की बौछार
 - * पिता बन हर पल देते हित शिक्षा भरमार
- * मन का ताला खोलने की गुरु ही हैं चाबी
 - * सम्यक्तव की बगिया को सींचने वाले गुरु ही हैं माली
- * गुरु के ही मार्गदर्शन में जीवन बनता है उन्नत
 - * गुरु ही बांटते हैं स्नेह, सद्भाव, करुणा का अमृत
- * गुरु ही दुःख में हरदम साथ निभाते हैं
 - * गुरु ही सुख-शांति की राह निःस्वार्थ दिखाते हैं
- * गुरु ही होता है परमेश्वर का सगुण रूप
 - * गुरु ही लाता है धर्म व परमात्मा का स्वरूप

गुरु का बखान

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

सात समुद्र की मसि करुं, लेखनी सब बन जाय।
सब धरती कागद करुं, गुरु गुण लिख्या ना जाय।

तीरथ मिलियां एक फल, संत मिलियां फल चार।
सदुरु मिलियां हजार फल, जीवन का उद्धार॥

दुर्लभ है जग में अहो, ऐसे पावन दृश्य।
स्वार्थ रहित गुरु हो जहाँ, और समर्पित शिष्य॥

कबीरा ते नर अंध हैं, गुरु को मानत और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर॥

गुरु महिमा अपरंपार है, अन्त न जाने कोय।
अनाथ के वो सनाथ हैं, अनुभव से मालूम होय॥

यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

गुरु उपदेश चित्त में धारो, तो बन जाओगे अति पुण्यवान।
गुरु आज्ञा हृदयंगम करो, रखो चित्त में इसका सदैव ध्यान।

-संकलित

दीक्षा

संसार में मगजमारी है।
संयम में समझदारी है॥

रत्नत्रय के महान् आराधक, आगम ज्ञाता, परम पूज्य आचार्य भगवन्
1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविंद से मुमुक्षु भाई-बहनों की आगारों सहित
घोषित दीक्षाएँ-

21 अक्टूबर 2020

- मुमुक्षु बहन निधि जी कोटड़िया, नंदुरबार

19 नवम्बर 2020 (ज्ञान पंचमी)

- मुमुक्षु भाई लक्ष्मण जी गुलेच्छा, कानोड़िया

मुमुक्षु बहन सलोनी जी कटारिया, रतलाम

मुमुक्षु बहन दीप्ति जी धाड़ीवाल, लासलगांव

मुमुक्षु बहन रीना जी भंडारी, शिरूड

5 दिसम्बर 2020

- मुमुक्षु बहन अनिता जी कुम्भट, संबलपुर

आचार्य भगवन् के मुखारविंद से 10 जुलाई 2020 को जोधपुर में 3 जैन
भागवती दीक्षाएँ संपन्न हुईं।

1. श्री गौरव जी बैद, देशनोक - नवदीक्षित श्री गुणीश मुनि जी म.सा.
 2. श्रीमती तारा देवी बैद, देशनोक - नवदीक्षिता पूज्या श्री तारिका जी म.सा.
 3. सुश्री दीपिका जी बैद, देशनोक - नवदीक्षिता पूज्या श्री दीपिका श्रीजी म.सा.
 4. सुश्री श्रेया जी चेलावत, रामपुरा - नवदीक्षिता पूज्या श्री शीलसुगंधा श्रीजी म.सा.
- (इनकी दीक्षा 22 अगस्त 2020 को जोधपुर में हुई)

राम गुरु विराट हैं।

दीक्षाओं का ठाठ हैं॥

उग्र तपस्वीराज पूज्य श्री अशोक मुनि जी म.सा. का 97वां मासखमण

यथा नाम तथा गुण-‘अशोक मुनि’ अ-शोक हैं।

आत्म बल का अद्भुत अप्रतिम आलोक हैं॥

दैनिक दिनचर्या, विहार, प्रवचन अनवरत है।

नमन है इन तपस्वीराज को जो पूर्ण अप्रगत हैं।

इस हिमालयी तप को हम करते हैं शत-शत वंदन।

साधुमार्गी संघ को बना दिया है शत-प्रतिशत नंदन॥

इस विश्व कीर्तिमान ने घोल दिया है चंदन चंदन।

‘वीना’ करते हैं इस नव प्रतिमान को वंदन अभिवंदन!!

उग्र तपस्वी राज पूज्य श्री अशोक मुनि जी म.सा. विश्व की विरल विभूति
बन गये हैं। यह वर्ष स्व. आचार्य श्री नानेश का शताब्दी वर्ष चल रहा है। इसमें इन्होंने
मासखमण का शतक पूर्ण करने के संकल्प के साथ सौवीं वर्षगांठ पर सौ मासखमण
अपने गुरु को समर्पित करने के भाव बना रखे हैं। इन्होंने निराहार को ही जीवनाधार बना
लिया है। विश्व में एकमात्र संत हैं, जिन्होंने 96 मासखमण पूर्ण किये हैं और 97वां
गतिशील है। ऐसे माँ भारती के लाल को शत-शत वंदन, अभिवंदन।

संपूर्ण साधुमार्गी संघ गौरवान्वित है ऐसे संत को पाकर।

गीतों का गुलदस्ता

मेरे गुरुवर नाना

जीवन के पथ में भटके हुए मन को, रश्मि जेलमी, औरंगाबाद

मिल जाए गुरुवर की छाया,

ऐसे ही गुरुवर जीवन में मिले हैं,

मैं जब से शरण तेरी आया, मेरे नाना.....

माता श्रृंगारा के रत्न कहाये, पिता मोडीलाल सुत जाये,

दांता ग्राम में जन्म है पाये, पोखरना कुल उजियारे।

संस्कारों की फुलवारी से, जिसने अपना जीवन महकाया,

ऐसे ही गुरुवर जीवन में मिले हैं, मैं जब से शरण तेरी आया।।

समता प्रदाता गुरुवर कहाये, मिला था संघ का सितारा,

ऐसे समता विभूति को पाकर, धन्य-धन्य हुआ संघ हमारा।

“अनन्य महोत्सव” की बेला है आई, जीवन में करे उजियारा,

ऐसे ही गुरुवर जीवन में मिले हैं, मैं जब से शरण तेरी आया।।

ऐ मेरे गुरुवरम् (तर्ज- ऐ मेरे हमसफर)

अनुपमा डह्या

ऐ मेरे गुरुवरम् बस तेरा इंतजार,

सुन सदाएं दे रही हैं, मंजिल मुक्ति की(भक्ति की)।।

मेरे गुरु ने देखा है, हंस के जिसे इक बार,

वहीं पर खुले हैं, कई रास्ते, गिर गयी हर दीवार,
तुझसे ही तो रोशन, मंजिल मुक्ति की.....॥१॥

मैंने नहीं देखा है, तुझसा कोई यहाँ,

तेरे ही चरणों में पाए, मैंने तो दोनों जहाँ,

तेरी ही शरणों में, मंजिल मुक्ति की.....॥२॥

जग सारा धोखा है, बस तुझ पे एतबार,

सच्चा है इक तू ही, झूठा सब संसार,

तू है, हाँ वही है, मंजिल मुक्ति की.....॥३॥

तुझसे ही तो पाया है, जीवन का आधार,

तू ही है मेरी पूजा, तू ही हैं संस्कार,

पाके तुझको पा लूं, मंजिल मुक्ति की.....॥४॥

अनन्य महोत्सव जय नानेश

कांता बैद, इंदिरापुरम

जय नानेश गणि अवतारी,
संसार में फैली कोरोना महामारी।

विपद् हरो गुरुदेव हमारी,
हे! समताधारी, परउपकारी,
सम्यक् जीवन पर हम बलिहारी।।

तत्त्व ज्ञान का खोला खजाना,
तव वाणी है अमृत का झरना।

मंगल पाठ का कवच पहनाना,
८४ लाख जीवयोनि में साता पहुँचाना,
हे! वात्सल्य प्रिय नाना।।

संत शिरोमणि, चारित्र चूड़ामणि,
हे! बाल ब्रह्मचारी, गणों के गणि।

हम सब हैं आपके ऋणी,
आपने दिया ‘‘रामेश’’ गणि।।

‘‘अनन्य महोत्सव’’ हम मनाएं,
गुरु नाना के गुण हम अपनाएं।

जीवन धन्य हम बनाएं,

नव जीवन हम पाएं,

‘‘कोरोना’’ को दूर भगाएं।।

कोरोना ने हमें जैनिज्म के कितने करीब है लाया

मनाली कटारिया, पुणे

कोरोना तुमने हमको बहुत कुछ है सिखाया,

जैन धर्म के सिद्धांतों के कितने करीब है लाया।

मनुष्य जन्म और नर तन यह अनमोल है पाया,

जिससे जिनशासन का गौरव है बढ़ाया।।

अहिंसा, जीवदया, अपरिग्रह, शिष्टाचार और सभ्यता का पाठ पढ़ाया,

पूरे देश में ‘‘जैन धर्म’’ का नाम ऊँचा उठाया।।

देश नहीं दुनिया को दिखाया, अपनों का एहसास जताया,

माँ-बीवी का मोल बताया, बच्चों से है प्रेम बढ़ाया।।

हाथ धोना, मास्क लगाना, गर्म पानी का सेवन कराया,

साइंस ने जो सिखलाया, प्रभु महावीर ने भी बतलाया।।

जप-तप का मोह लगाया, व्यसनों से तूने छुड़ाया,

धर्म-ध्यान का पाठ पढ़ाया, कर्मों की लीला को बताया।

आत्मा से परमात्मा के पथ पर निकट पहुँचाया,

कोरोना तुमने हमको जैनिज्म के कितने करीब है लाया।।

अंत में कहेंगे-

अब विनती कर रही है ये दुनिया सारी।

जल्द ही दूर हो जाये ये कोरोना की महामारी।।



तर्ज: चाहा है तुझको चाहूंगी....

आरती रांका (चैनई)

चाहा है गुरुवर चाहूंगी हर दम
मोक्ष के द्वारे मुझे जाना है एक दिन।
संसार समुद्र को मुझे पार करना है
मुगती की राह में मुझे खुद को चलना है,
मन में है कितनी उलझन, छूटे कैसे मोह के बंधन, चाहा है गुरुवर...
नरक निगोद को भोगा अनंता बार

आसक्ति के पीछे न छूटे यह घर बार
समयक से भरदो जीवन, तप से हो इसका सृजन
चारित्र में लायें निखार, आत्म शक्ति पाएं अपार
दे दो आशीष मुझको गुरुवर पाऊँ मुक्ति का द्वारा, चाहा है गुरुवर....

संयम से जोड़ूँ मैं अपने मन के तार
आत्म में भरदो प्रभु मुक्ति का ये सार
सारी उम्र है मुझको गुरुवर तेरे साथ चलना
हाथ थाम कर गुरुवर कर दो भव से पार
तेरे साथ मिल जाए मुझको मोक्ष का द्वार
चाहा है गुरुवर...

गुरु सामने है मेरे, फिर क्यों ये दूरी है
अब कैसे बनाऊँ मैं, मुझे कर्मों ने घेरा है
क्या ये जिन्दगानी है, झूठे मोह के बन्धन है, चाहा है गुरुवर...

हमारे गुरुदेव

साधुमार्गी संघ के नवम् पट्टधर, जनमानस के ज्योतिर्धर,
युगदृष्टा, प्रकाण्डज्ञाता, जीवन है जिनका आगम धरा पर,
विश्व शांति के मसीहा, प्रभुविष्णुता के अलौकिक अवतार
संपूर्ण समता परिवार सुखसाता विदित करते हुए क्षमायाचना करता बारंबार।
गंवरा के जाये, नेमिकुल के उजाले,
श्रद्धेय आचार्य भगवन तोड़ रहे,
नित्य शंका, मिथ्यात्व प्रपंच के ताले।
आगमज्ञाता ने कई विषयों पर संशोधित कर हमें दिया अद्भुत ज्ञान,
आपश्री की सूझबूझ पर नतमस्तक है विज्ञान।
सामाजिक कुरीतियों को हटा, उत्क्रान्ति का बिगुल बजाया,
लॉकडाउन के पहले से होली चातुर्मास पर, दर्शनार्थी आवगमन का निषेध कराया।
हम ज्ञानवान हो, क्रियावान हो, चारित्र की धरा हो सुंदर,
इस विषय पर आपकी सद्प्रेरणा है पुरुषार्थ को लेकर
हे तीर्थंकर सम आचार्य भगवन आपके चरण कमल में है विधिवत् वंदन,
प्रमाद से दूर रहकर लगाये संघ सेवा का चंदन

सुषमा बरड़िया

क्षमा पर्व आत्मशोधन का पर्व है-आचार्य श्री रामेश

वर्तमान के वर्धमान हों, जिनमार्ग में गतिमान हों।
भक्तों के भगवान हों, हुक्म संघ के प्राण हों।।

जोधपुर- आराध्य देव आचार्य प्रवर 1008 श्री
रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री
राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पर्यूषण पर्व अत्यंत
श्रद्धा भक्ति व हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। चोरड़िया भवन में राजेश मुनि जी
म.सा. तथा हिमांशु मुनि जी म.सा. ने अंतःगढ़ सूत्र का सुंदर वाचन विवेचन कर
सबको आत्मविभोर कर दिया।

जोधपुर में विराजित सभी संत-सतियों ने अपूर्व धर्म-ध्यान की ज्योति
जला दी। शासकीय नियमों का पालन करते हुए विभिन्न धर्म क्रियाएँ की गईं।
संवत्सरी महापर्व के अवसर पर परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने फरमाया कि
कषाय की अमर बेल खुद तो हरी-भरी रहती है और हमारे क्षमा आदि आत्म-
गुणों को सोख लेती है। सबसे उत्तम क्षमा धर्म है। सरलता, सहजता, सौम्यता,
समभाव से जीवन का विकास होता है। दोपहर में श्री नीरज मुनि जी
म.सा. ने 'आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे, चमके देश में' कार्यक्रम के तहत
पाटावली का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया।

संवत्सरी के दूसरे दिन सामूहिक क्षमा याचना कार्यक्रम श्री अ.भा.
साधुमार्गी जैन संघ द्वारा रखा गया। इस अवसर पर जिनशासन गौरव
आचार्य श्री हीराचंदजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्री यशवंत मुनि
जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं महासती श्री ऊषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-
3 सभा में उपस्थित थे। विश्व वंदनीय आचार्य भगवन् रामेश ने अपनी महान
देशना में फरमाया कि यह क्षमा पर्व आत्म शोधन व आत्म दर्शन का पर्व है।
तीर्थंकर के बताये राह पर चलते हुए कोई विपरीत आचरण किया हो तो इसके
लिये हृदय के अंतःकरण से क्षमायाचना करनी चाहिए। यह क्षमा-पर्व
औपचारिक बनकर न रह जाये। पंच परमेष्ठी व चतुर्विध संघ से हार्दिक क्षमा-
याचना प्रस्तुत करते हैं। श्रावक-श्राविका वर्ग से भी निवेदन है कि वे ज्ञानवान व
क्रियावान बनें ताकि साधु समाज पूर्ण सजगता के साथ शुद्ध संयम पालन कर
सके। कोई भी धर्म से विमुख न बने।

श्री यशवंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दुर्लभ मानव भव में साधना
करे। क्रोध, मान, माया, लोभ के संस्कारों को कम करें। कषाय जितना कम
होगा, मोक्ष के निकट होंगे। सिद्धि हमारे भीतर में ही है। यहाँ राम गुरु जैसे त्यागी
महापुरुष विराज रहे हैं, उनके अनमोल वचन निरंतर प्राप्त हो रहे हैं। श्रवण,
ग्रहण, धारण कर आचरण में उतारने का लक्ष्य रखें। संतों ने हार्दिक क्षमायाचना
की।

संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भी सभी से क्षमा-याचना की।

प्रेषक- महेश नाहटा



प्रेरक कथा

बात उस समय की है, जब शिक्षा का रूप आज से बहुत अलग हुआ करता था। उस समय के विद्यालय गुरुकुल हुआ करते थे। विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए अपने गुरु के पास आश्रम में ही रहना पड़ता था। सभी मिलजुल कर एक परिवार की तरह रहते और मिल-बांटकर सब काम किया करते थे। सभी शिष्य बड़ी निष्ठा और ईमानदारी के साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। उस समय शिक्षा भी कुल के अनुसार ही दी जाती थी। सारी शिक्षाएं प्राप्त कर एकलव्य युवा हो गया।

एकलव्य के पिता जानते थे कि द्रोणाचार्य केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग को ही शिक्षा देते हैं और उन्होंने एकलव्य को भी इस बारे में बताया, परन्तु धनुर्विद्या सीखने की धुन और द्रोणाचार्य को अपनी कलाओं से प्रभावित करने की सोच लेकर उनके पास गया। परन्तु ऐसा कुछ भी न हुआ और गुरु द्रोणाचार्य ने उसे अपमानित कर अपने आश्रम से निकाल दिया।

एकलव्य इस बात से तनिक भी आहत न हुआ और उसने वहीं जंगल में रहकर धनुर्विद्या प्राप्त करने की ठान ली। उसने जंगल में द्रोणाचार्य की एक मूर्ति बनायी और उन्हीं का ध्यान कर धनुर्विद्या में महारत हासिल कर ली।

एक दिन आचार्य द्रोण अपने शिष्यों और एक कुत्ते के साथ आखेट के लिए उसी वन में पहुँच गए, जहाँ एकलव्य रहते थे। उनका कुत्ता राह भटक कर एकलव्य के आश्रम पहुँच गया और भौंकने लगा। एकलव्य उस समय धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहे थे। कुत्ते के भौंकने की आवाज से एकलव्य की साधना में बाधा पड़ रही थी। अतः उसने ऐसी कुशलता से बाण चलाये कि कुत्ते को जरा-सी खरोंच भी नहीं आई और अपने बाणों से कुत्ते का मुँह बंद कर दिया।

कुत्ता असहाय होकर गुरु द्रोण के पास जा पहुँचा। द्रोण और शिष्य ऐसी श्रेष्ठ धनुर्विद्या देख आश्चर्य में पड़ गए। वे उस महान धनुर्धर को खोजते-खोजते एकलव्य के आश्रम पहुँचे और देखा कि एकलव्य ऐसे बाण चला रहा है, जैसे कोई चोटी का योद्धा भी नहीं चला सकता। ये बात द्रोणाचार्य के लिए चिंता का विषय बन गयी। उन्होंने एकलव्य के सामने उसके गुरु के बारे में जानने की जिज्ञासा दिखाई तो एकलव्य ने उन्हें वो प्रतिमा दिखा दी।

उन्हें यह जानकार और भी आश्चर्य हुआ कि द्रोणाचार्य को मानक गुरु मानकर एकलव्य ने स्वयं ही अभ्यास से यह विद्या प्राप्त की है। अपनी प्रतिमा को देख आचार्य द्रोण ने कहा कि अगर तुम मुझे ही अपना गुरु मानते हो तो मुझे गुरु दक्षिणा दो। एकलव्य ने अपने प्राण तक दे देने की बात कर दी। गुरु दक्षिणा में गुरु द्रोण ने अंगूठे की मांग की, जिससे कहीं एकलव्य सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर ना बन जाए। अगर ऐसा हुआ तो अर्जुन को महान धनुर्धर बनाने का वचन झूठा हो जाएगा। एकलव्य ने बिना हिचकिचाहट अपना अंगूठा गुरु को अर्पित कर दिया। इसके बाद एकलव्य को छोड़कर सब चले गए। एकलव्य ने इतनी बड़ी गुरु-दक्षिणा देकर शिष्यत्व का अर्थ पूरी दुनिया को समझाया और इसीलिए एकलव्य को ही जब भी कोई गुरु द्रोणाचार्य का नाम याद करता है उन्हें ही सबसे पहले एक अच्छे शिष्य के नाम से याद किया जाता है।

महिला समिति के बढ़ते कदम

ब्यावर- म.सा. की प्रेरणा से कोरोना महामारी की वजह से पर्युषण पर्व पर घर-घर में त्याग-तपस्या का ठाठ लगा रहा। महिला मंडल द्वारा 14 घंटे का अखंड जाप कई घरों में संपन्न हुआ।

साधुमार्गी परिवार में सभी घरों में सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, संवर, जाप

आदि का कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हुआ। श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा. की प्रेरणा से 5 करोड़ 21 लाख स्वाध्याय के प्रत्याख्यान बहनों ने ग्रहण किये। तीन बहनों ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये-सुशीला जी मुणोत, राजकुमारी जी बुरड़, कमला बाई जी बुरड़।

पयुषण पर्व में 200 घरों में श्री अंतःगढ़ सूत्र का वांचन हुआ। अब कर कमाल में ब्यावर से पलक बोहरा ने टॉप 4 में अपना स्थान बनाया। संघ सदस्यता में ब्यावर से 20 फॉर्म भरवा चुके हैं। इसमें गुप्त दानदाता द्वारा 5000/- की राशि गुप्त रूप से प्रदान की गई।

केसरिया कार्यशाला का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक चल रहा है। तपस्या के क्रम में डिम्पल जी बंट-11, पद्मावती जी कोठारी-7, मधु जी खींचा 5 की तपस्या, 4 तेले, 30 बेले, 10 उपवास, एकासन, आयंबिल पौषध, संवर आदि निष्पादित हुए। इस लॉकडाउन में 70-80 हजार सामायिक हुई। मंडल में सुश्राविका विमलेश जी ओस्तवाल ने 15 बहनों को गमक, 10 भाई-बहनों को प्रतिक्रमण एवं स्वयं रोज 5 सामायिक, महीने में 2 तेले, 1 उपवास, 1 आयंबिल तप की आराधना करते हैं। बहुत बहुत साधुवाद। आदरणीय वीना जी नाहर जो ब्यावर महिला मंडल की शान हैं-9 आचार्यों पर 101 संगान एवं आचार्य श्री नानेश पर 152 गुणगान स्तुति के ऑडियो प्रस्तुत किये। आचार्यों के गुणों का वर्णन करना महानिर्जरा का हेतु है। बहुत-बहुत साधुवाद। सर्वधर्मी सहायता कोष में ब्यावर से 25100/- की राशि तथा इस एक साल के कार्यकाल में लगभग 1 लाख से ज्यादा की राशि एकत्रित की गई। -शशिकला डांगी, प्रमिला बोहरा

दिल्ली। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी ठाणा-3 और शासन दीपिका विपुला श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की प्रेरणा से दिल्ली में संपन्न और जारी तपस्या में तपस्वियों के नाम:- कंचन जी छाजेड़-12, सिद्धार्थ जी भूरा-3, सार्थक जी कोठारी-5, गुप्त तपस्या-9, दीक्षा जी चौधरी--9, महेन्द्रजी कोठारी-8, महक जी हीरावत-8, गुप्त तपस्या-6, कंचन देवी छाजेड़-6, गौतम जी हीरावत-5 दिल्ली क्षेत्र में चातुर्मास काल प्रारंभ से ही तेले की लड़ी, आयंबिल की लड़ी, एकासन की लड़ी बराबर चल रही है। कोरोना काल में नवकार मंत्र जाप, णमोत्थुण जाप, लोगस्स जाप, सामायिक धर्म चक्र, नानेश चालीसा, रामेश चालीसा आदि धार्मिक कार्यक्रम बहुत जोश के साथ चले। अध्यक्ष इंदिरा जी लुणावत की प्रेरणा सराहनीय रही।

महिला मंडल की बहनों ने अनाथ आश्रम में भोजन व वस्त्र वितरण का कार्य किया। मंत्री सुशीला जी संचेती, उपाध्यक्ष कंचन जी आंचलिया की देख-रेख में कार्य संपन्न किया गया। पाठ्यक्रम परीक्षा की तैयारी में बहनों ऑनलाइन क्लास में बड़-चढ़कर भाग ले रही हैं। रश्मि जी युवती शक्ति का कार्य करके युवतियों को जागरूक कर रही हैं। महिला आजीवन सदस्य बनाने में गाजियाबाद व दिल्ली क्षेत्र में कार्य में प्रगति हो रही है। केसरिया कार्यशाला में कई बहनों ने भाग लिया।

-कांता जैन (बैद), अंचल संयोजिका

खेतिया। शासन दीपिका सुयशाश्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के प्रवेश होते ही खेतिया श्री संघ में ज्ञान ध्यान का अपूर्व उत्साह जागृत हुआ जिसमें 25 बोल, लघुदंडक, जीवधड़ा, गमक, श्रावक का महत्व, सामायिक-प्रतिक्रमण की आराधना, धर्म स्थानों पर सोशल डिस्टेंस द्वारा की गई। किंतु महासंक्रमण रोग को देखते हुए महासतियाँ जी म.सा. जो हमारे शासन की धरोहर हैं, उनकी सुरक्षा हेतु ही घर-घर में धर्माधना चल रही हैं। 36 सूत्री कार्यक्रम पर विशेष प्रकाश डाला जा



रहा है। बच्चों में विशेष उल्लास बना हुआ है। पर्युषण पर्व की आराधना घर-घर अंतगढ़ सूत्र की वाचनी समता महिला मंडल की अध्यक्ष सुषमा जी बोहरा ने प्रतिदिन विभिन्न प्रतियोगिता एवं आयुषी लूणावत ने बच्चों की प्रतियोगिताएं सम्पन्न करवाई। पर्युषण पर्व के उपलक्ष में 1780 प्रतिक्रमण, 68 संवर, 35 पौषध, 2578 स्वाध्याय गाथा, 64 षट्स तप, 40 सर्वतोभद्र तप द्रव्य से, पुच्छिस्सुणं और लोगस्स से आराधना की एवं अनेक उपवास, एकासन, आयंबिल, बेले-तेले संपन्न हुए। साथ ही विशेष आराधना केसरिया कार्यशाला में 37 महिलाओं ने प्रतिक्रमण की प्रतियोगिता देकर संघ का गौरव बढ़ाया। बड़ी तपस्या में दीपक बोथरा 15, सुषमा बोहरा 11, प्रकाश जी संचेती 9, शोभा कोठारी 9, पलक पारख 8 और जय लुणावत की 8 की तपस्या हुई एवं 2 माह के एकांतर करने वाले सुषमा बोहरा, जयश्री बोहरा, सुमन लुणावत, संगीता बोथरा और मोना चौरडिया, इनके एकांतर पूर्ण हुए। 10 एकासन एवं 5 बियासना के मासखमण एवं सचितत्याग पौरसीतप, वर्णमालातप, बड़ी स्नान आदि विविध मासखमण संपन्न हुए। जीनेश लुणावत और जय लुणावत गोचरी सेवा, प्रकाशचंद बोहरा ने एकासन तपस्या की लड़ी, मोहनलाल जी बोहरा नवकारमंत्र का जाप और भारती लुणावत ने स्वाध्याय की दलाली की। नन्ही बालिका अक्षरा खिंवसरा ने प्रतिक्रमण करवाया। वैभव सोनी, नैतिक लोढ़ा और हार्दिक बोथरा ने दशवैकालिक के चार अध्ययन एवं उत्तराध्ययन का 1 अध्ययन, आर्या बोहरा, अक्षरा खिंवसरा, यतींद्र सोनी आदि पुच्छिस्सुणं कंठस्थ कर रहे हैं। संघ के अध्यक्ष सुनीलकुमारजी खिंवसरा और संतोष जी सुराणा का सराहनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

—सुषमा बोहरा, खेतिया

देवरिया— विश्व की विराट विभूति, समता के मसीहा, जन-जन के आस्था के केन्द्र, परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. की जन्म शताब्दी, अनन्य महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में मुनिवरों का सान्निध्य पाकर धर्म-ध्यान, तप-त्याग की गंगा अविरल प्रवाहमान है। लॉकडाउन के सरकार के नियमों को ध्यान में रखते हुए प्रार्थना, प्रवचन आदि गतिशील है।

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. का प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञान-ध्यान में पुरुषार्थ लाजवाब है। 12 भाई-बहनों ने सामायिक सूत्र, 24 ने समकित के 67 बोल और जंबू द्वीप का नक्शा, कालचक्र, छः काय का थोकड़ा, लघु दंडक, गति-आगति, पुच्छिस्सुणं, दशवैकालिक के 3 अध्ययन, उत्तराध्ययन का पहला अध्ययन श्रावक के 12 व्रत आदि मे शरीक होकर आनंद की अनुभूति की। घर थोड़े होने के बावजूद भी शासन दीपक पदम मुनि जी म.सा. जी प्रेरणा से आशातीत माहौल बना। तपस्या में भी म.सा. की प्रेरणा से 5 मासखमण, 15, 11, 9, 8, 5 आदि तपस्याएँ हुई। मोहनलाल जी सुथार ने 8 आयंबिल करके अपने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया।

षट्स तप आराधना में 50 से ऊपर भाई-बहनों ने उत्साह से भाग लिया। महापर्व के प्रसंग में अंतगढ़सूत्र, 9 आचार्यों के जीवन-दर्शन तथा 8 दिवस के अलग-अलग विषयों पर प्रवचन हुए। 3 दिवसीय शिविर में 40 सदस्य सहभागी बने। एक दिवसीय युवा शिविर में स्थायी युवकों तथा भीलवाड़ा युवा संघ ने भी लाभ उठाया।

श्री उदित मुनि जी म.सा. अपने ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग में रमण कर रहे हैं। पदम मुनि जी म.सा. के दीर्घ तप-आराधना प्रारंभ हुई। ना ही तपस्या का पता लगा और न ही पारणे का। स्वाध्याय, ज्ञान-चर्चा आदि में ही संलग्न रहते हैं। 24 घंटे में 20 घंटे की मौन रहती है। आचार्य भगवन् के हमारे संघ पर अनंतानंत उपकार हैं जिससे ऐसे महान् संतों का चातुर्मास प्राप्त हो सका।

—प्रीति सूरिया

रायपुर— रायपुर (छत्तीसगढ़) श्री साधुमार्गी समता महिला मंडल एवं बहुमंडल के संयुक्त तत्वावधान में चातुर्मास प्रारंभ होने से पूर्व ही तप, त्याग, धर्म-आराधना निरंतर

गतिशील है। विशेष रूप से ऑनलाइन प्रतिक्रमण क्लास जिसमें देश भर से 214 महिलाएं विधि और अर्थ सहित प्रतिक्रमण सीख रही हैं जो हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। घर पर रहते हुए धर्म से जुड़े रहे, इस हेतु रोज छोटे-छोटे टास्क ग्रुप में भेजे जाते हैं जो पूरे छत्तीसगढ़ में अलग-अलग जगह पर भी चल रहे हैं। हर माह प्रथम तीन को पुरस्कृत किया जाता है। इसके अलावा बच्चों की पाठशाला भी बहुत ही सुचारू रूप से अध्यापकों द्वारा ऑनलाइन ली जा रही हैं जिसमें फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, सामायिक की पाटी, राम गुरु चालीसा आदि सीख रहे हैं और परीक्षा भी लेकर पुरस्कृत किया जा रहा है। सबको पर्सनल कॉन्टैक्ट करके संगठन का कार्य भी चल रहा है जिसमें अभी तक 60 महिलाओं ने सदस्यता ली है। सभी कार्य गतिमान है। उपवास, आयंबिल, एकासन, बियासना की लड़ी निरंतर गतिमान है। केसरिया कार्यशाला, नानेशवाणी ओपन बुकपरीक्षा, संस्कार पाठ्यक्रम हेतु निरंतर सभी को सूचित किया जाता है। कोरोना काल में भी घर पर रहते हुए धर्माराधना में रायपुर में सभी महिलाएं और बच्चे भरपूर सहयोग दे रहे हैं।

—वंदना धाड़ीवाल, रायपुर

इंदिरापुरम, गाजियाबाद— महापर्व संवत्सरी पर गाजियाबाद क्षेत्र में तप, दया और प्रत्याख्यान की लड़ी लगी। 21 उपवास, 3 एकासन, 352 सामायिक, अखंड नवकार मंत्र का जाप 12 घंटा प्रतिदिन, मौन, नवकारसी, पौरसी, 500 गाथा का स्वाध्याय, पुच्छिस्सुण, लोगस्स जाप, नानेश चालीसा, रामेश चालीसा, रात्रि भोजन का त्याग, हरी का त्याग और प्रतिदिन प्रतिक्रमण की धर्माराधना की बहुत अच्छी प्रभावना हुई। यह क्षेत्र एकदम नया है, कोरोनाकाल में ही यह साधुमार्गी संघ के संपर्क में आया है! उपरोक्त रिपोर्ट केवल 8 परिवार की हैं। यहाँ अभी 14 महिलाएँ ही आजीवन सदस्य बनी हैं। इस क्षेत्र को और आगे बढ़ाने की कोशिश जारी है।

—कांता बैद, इंदिरापुरम

अजमेर— अत्र विराजित महासती श्री वनीता श्री जी म.सा. के सान्निध्य में LIT FIST उनकी पावन प्रेरणा से श्रीमती कांता प्रदीप जी सिंगी ने 31 उपवास की तपस्या की। तीन लोढ़ा परिवार सदस्यों सहित 4 एकासना के मास खामण हुए। लगभग 15 तेले हुए। कुछ एकासन की अठाई हुई। अच्छी संख्या में उपवास, आयंबिल एकासन आदि तप हुए। सामायिक अच्छी संख्या में होती रही।

‘अब कर कमाल’ में अजमेर के 16 बच्चों ने भाग लिया उनमें से 12 बच्चों को 500 रुपये का पुरस्कार केन्द्र से मिला (12 बच्चे विजेता रहे)। Final में All India में 6-10 वर्ष के ग्रुप में जैनम् मेहता, अजमेर ने तृतीय स्थान प्राप्त कर सोने का सिक्का पुरस्कार में जीता। नानेश वाणी प्रतियोगिता में प्रथम 50 में विनीता जी सांखला। प्रोफेशनल फोरम की प्रतियोगिता में अनीता जी सकलेचा और युवती शक्ति Activity में हरांशी जैन ने अंचल स्तर पर स्थान प्राप्त किया।

महासतियाँ जी के पावन सान्निध्य में महिलाओं और पुरुषों ने क्लास में कर्म सिद्धांत का अध्ययन किया। दोपहर में प्रतिक्रमण और थोकड़ों आदि का ज्ञान प्राप्त किया। पर्युषण के दौरान अंतगढ़ वाचन, शास्त्र वाचन, नवकार मंत्र जाप और कुछ संवर पौषध आदि स्थानक में हुए। शेष घर-घर प्रतिक्रमण, सामायिक, अंतगढ़त्र, संवर आदि अच्छी संख्या में हुए।

अभी कर्म सिद्धांत और जैन संस्कार पाठ्यक्रम की तैयारी चल रही है। केसरिया कार्यशाला आयोजित की जाएगी। दर्शनार्थी अब थोड़े सीमित ही आते है। धन्यवाद!

निवेदक—नोरत बाई सिंगी, शर्मिला खींवसरा

व्यास में सोनू जी तपस का वर्णन करते हुए

- * सोनिया जी कोठीफोडा - 24 (जारी)
- * सुश्री निकिता जी लोढ़ा - 18
- * फतेहलाल जी सूरिया - 15
- * विनय जी सांड - 15
- * स्वाति जी लोढ़ा - 15
- * खेमचंद जी पारख - 15
- * संगीता जी लोढ़ा - 15
- * बालरत्न दिव्यांश भूरा- बियासना का मासखमण (उम्र-8 वर्ष, नोखामंडी)
- * सत्यनारायण जी भूतड़ा (माहेश्वरी) - 25 की तपस्या (बोहेड़ा) (अजैन होते हुए भी आत्मबल का परिचय) बाल तपस्वी ऋषि डागा -वर्ष 8 की तपस्या की जानकारी प्राप्त हुई, इसके आधार पर प्रेषित कर रही हूँ। यदि किसी का भी नाम नहीं आया हो तो बताने की .पा करें, अगले अंक में लिखने के भाव रखती हूँ। यदि कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा-प्रार्थी हूँ।



महिला समिति की तृतीय कार्यकारिणी मीटिंग Zoom द्वारा आयोजित :-

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नंदा जी कर्नावट की राष्ट्रीय अध्यक्षता में महिला समिति की तृतीय कार्यकारिणी बैठक दिनांक 28.8.2020 को ने के द्वारा आयोजित की गई। बैठक की शुरुआत तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रणेता **आचार्य श्री रामलालजी म.सा.**, बहुश्रुत वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर **श्री राजेशमुनि जी म.सा.** एवं सभी चारित्र आत्माओं के चरणों में वंदन करते हुए महामंत्र नवकार के गुणगान से की गई। बैठक के आरंभ से पूर्व रा.महामंत्री श्रीमती गीता जी दक द्वारा सभी से संवत्सरी पर्व के अवसर पर क्षमापना किया गया। इसके बाद रा.महामंत्री द्वारा मीटिंग का प्रारूप बताया गया और रा.अध्यक्षा नंदा जी कर्नावट द्वारा सभी को संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया। इसके बाद रा.महामंत्री द्वारा सदन से द्वितीय कार्यकारिणी मीटिंग की स्वीकृति प्राप्त की गई। साथ ही रा.महामंत्री द्वारा तृतीय कार्यकारिणी बैठक का ब्यौरा रखा गया। दिनांक 26 अप्रैल 2020 को अक्षय तृतीया समारोह पाली संघ के समक्ष उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। दिनांक 4 मई 2020 से 16 मई 2020 तक महिला समिति की अंचलवार उपाध्यक्ष, मंत्री एवं संयोजिकाओं के साथ मीटिंग की गई। महिला समिति द्वारा 15 मई को जैन संघ के साथ अनन्य चातुर्मास की मीटिंग में भाग लिया गया जिसमें अनन्य चातुर्मास के रूपरेखा के बारे में बताया गया। 17 मई को जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के पूर्व एवं वर्तमान अध्यक्ष, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष की मीटिंग रखी गई जिसमें सभी पदाधिकारियों ने अपने अनुभव साझा किये, जिससे लाभान्वित होकर श्री संघ को ऊँचाइयों तक पहुंचाया जा सके। 22 मई से 24 मई 2020 तक संपूर्ण भारत में अनन्य महोत्सव तप, संवर एवं सामायिक दिवस के साथ एकरूपता से मनाया गया। पिपलियाकला में आचार्य श्री नानेश जन्मोत्सव, आचार्य श्री रामेश के सान्निध्य में धर्माराधना के साथ संपन्न हुआ। 31 मई को जैन संघ के साथ जयपुर-ब्यावर अंचल में ग्लोबल कार्ड और Conference Call की मीटिंग में भाग लिया गया जिसमें ग्लोबल कार्ड के फायदे के बारे में चर्चा की गई।

3 जून 2020 को समता प्रचार संघ की टीम के साथ मीटिंग में भाग लिया गया जिसमें श्रीमान निर्मल जी सिंघवी ने बताया कि प्रत्येक अंचल से 70-80 स्वाध्यायी तैयार किये जाएं और साथ ही धार्मिक शिविर के आयोजन पर चर्चा की गई। इसी दौरान पाठशाला की राष्ट्रीय संयोजिका पूजा जी शाह के साथ मीटिंग में भाग लिया गया जिसमें पूजा जी शाह ने प्रेरणा की कि जहाँ-जहाँ समता संस्कार पाठशाला नहीं है वहाँ पाठशाला खुले। इसी के साथ 4 जून से 20 जून 2020 तक अंचलवार स्थानीय महिला मण्डल के अध्यक्ष-मंत्री और स्थानीय संयोजिका के साथ मीटिंग रखी गई जिसमें सभी प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई। 7 जून 2020 को सामायिक एवं प्रतिक्रमण स्पेशल की परीक्षा सम्पन्न हुई। 10 अगस्त को बैद परिवार से 3 दीक्षा एवं 22 अगस्त को चेलावत परिवार से एक दीक्षा उमंग के साथ जोधपुर में संपन्न हुई। इसी के साथ अब कर कमाल का अंतिम चरण 2 अगस्त 2020 को पूर्ण हुआ। 9 अगस्त को युवती वेबिनार हुआ। 10 अगस्त को महिला समिति की प्रवृत्ति संगठन की राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती सुरेखा जी सांड के साथ मीटिंग रखी गई जिसमें आजीवन सदस्य की नई स्कीम के बारे में विचार विमर्श किया गया। इसी के साथ 22 मई को प्रबोधिनी के द्वारा गीतिका एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें देश ही नहीं विदेश से भी कई प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गीता जी दक द्वारा सदन से वर्तमान ब्यौरा की

सहमति की अपील की गई और सदन ने अनुमति प्रदान की।

मीटिंग को आगे बढ़ाते हुए रा.कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमन जी सुराणा द्वारा आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया और बजट की विस्तृत जानकारी दी गई। इसके बाद श्रीमती सुरेखा जी सांड द्वारा संगठन, श्रीमती पुष्पा जी मेहता द्वारा केसरिया कार्यशाला, श्रीमती रश्मि जी जेलमी द्वारा युवती शक्ति, श्रीमती चंदनबाला जी सियाल द्वारा परिवारांजलि, श्रीमती सुमन जी सुराणा द्वारा प्रोफेशनल फोरम, श्रीमती नीलम जी रांका द्वारा समता छात्रवृत्ति और श्रीमती वीना जी नाहर द्वारा प्रबोधिनी की जानकारी दी गई। प्रत्येक प्रवृत्ति के अंतर्गत हुई गतिविधियों की विस्तृत एवं संपूर्ण जानकारी PPT के माध्यम से दी गई। प्रत्येक प्रवृत्ति में सभी को ज्यादा से ज्यादा प्रभावना करने के लिए प्रेरित किया गया। तत्पश्चात रा.महामंत्री द्वारा श्रीमती प्रभा जी देशलहरा की अनुपस्थिति में सर्वधर्मी सहयोग की जानकारी दी गई।

इसके बाद रा.महामंत्री द्वारा विशिष्ट अतिथि श्रीमती स्नेहलता जी कोठारी को आमंत्रित किया गया। इससे पहले रा.अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि स्नेहलता जी कोठारी एवं पुष्पा जी मेहता का चयन महिला समिति की सभी प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों का प्रकाशन श्रमणोपासक में हो सके, इसके लिए किया गया है। इसके बाद स्नेहलता जी कोठारी द्वारा बताया गया कि श्री संघ ने महिला समिति को श्रमणोपासक में धर्मप्रभावना करने के लिए 5-6 पेज का प्लेटफॉर्म दिया है जिसमें हम महिला समिति की सभी गतिविधियों का रोचकरूप से संपादन करके पूरे भारतवर्ष में पहुँचा सके। तत्पश्चात रा.महामंत्री द्वारा श्रीमती नीता जी छिप्पानी को आमंत्रित किया गया। नीता जी द्वारा महिला समिति के रिपोर्टिंग सिस्टम के बारे में बताया गया। रिपोर्टिंग सिस्टम का मुख्य उद्देश्य यह है कि हमारे संघ की प्रवृत्तियों से कितने लोग जुड़े हैं, हमारे संघ में कितने लोग अपनी सेवाएँ दे रहे हैं और आज हमारा संघ कहाँ खड़ा है? रिपोर्टिंग सिस्टम का प्रोसेस महिला समिति की blue print में दिया गया है। इसके बाद मुंबई-गुजरात अंचल से श्रीमती चंदा जी खुर्दिया, मध्यप्रदेश अंचल से श्रीमती स्वाति जी धम्मानी, मेवाड़ अंचल से श्रीमती मंजू जी रांका, कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल से श्रीमती राखी जी गाँधी, बीकानेर-मारवाड़ अंचल से श्रीमती नीतू जी मुणोत, तमिलनाडु अंचल से श्रीमती सुधा जी बोथरा, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल श्रीमती लता जी श्रीश्रीमाल और श्रीमती प्रभा जी सांखला, पूर्वोत्तर अंचल से श्रीमती कनक जी डागा, जयपुर-ब्यावर अंचल से श्रीमती शिमला जी नाहर और श्रीमती शशिकला जी डांगी, बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल से श्रीमती मीना जी पटवा और श्रीमती मंजू जी डागा एवं दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरप्रदेश से श्रीमती कंचन जी आंचलिया और श्रीमती किरण जी जैन द्वारा अपने-अपने क्षेत्र की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

इसके बाद रा.अध्यक्षा नंदा जी कर्नावट द्वारा अपने उद्बोधन से पूर्व सभी से संवत्सरी पर्व की क्षमापना की गई। नंदा जी ने बताया कि कोविड के कारण संघ और समाज जिस मुश्किल घड़ी से गुजर रहा है, उस समय महिला समिति ने सर्वधर्मी सहायता एवं समता छात्रवृत्ति के माध्यम से समाज के लोगों की मदद की है। महिलाएँ घर बैठे सभी गतिविधियों में भाग ले रही हैं, यह बहुत ही हर्ष की बात है। साथ ही सभी के अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इसके बाद पूर्व रा.अध्यक्ष श्रीमती कुमुद जी सिपानी एवं श्रीमती सुशीला जी सांखला ने अपने भाव व्यक्त किये। अंत में सभी से क्षमायाचना करके संघ समर्पणा गीत के गुणगान के साथ मीटिंग को विराम दिया गया।

माता-पुत्र प्रतियोगिता के परिणाम-

बड़े ही हर्ष का विषय है कि इस बार की प्रतियोगिता में 6 प्रतिभागियों के सभी उत्तर पूर्णतया सही थे। अतः इस बार सभी 6 प्रतिभागियों को पूर्ण पुरस्कार राशि को समान रूप से वितरित किया जायेगा। अर्थात् 2700/- को 6 लोगों में बराबर प्रदान करेंगे तो 450/- सबके हिस्से में आयेंगे। अन्य प्रतिभागियों के प्रयास भी सराहनीय रहे। 6 के नाम हैं-

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| 1. सुनीता जी जैन, कोटा | 4. मोना जी जैन, कोटा |
| 2. रंजना जी जैन, बजरिया | 5. प्रमिला जी बोहरा, ब्यावर |
| 3. मंजू जी भंडारी, कांकोली | 6. पूर्वा जी जैन, कोटा |

पुरस्कार सौजन्यकर्ता:- नंदा कर्णावट, बैंगलोर

सही उत्तर माता-पुत्र प्रतियोगिता के:

1. सोमा-आर्यरक्षित
2. पद्मावती-करकंडू राजा
3. रुक्मिणी-प्रद्युम्न कुमार
4. मदन रेखा-नमिकुमार
5. चेलना-कोणिक
6. भद्रा-अमरकुमार
7. थावच्चा गाथा पत्नी-थावच्चा कुमार

8. श्रीमती-अतिमुक्त कुमार
9. देवकीमाता-गजसुकुमाल
10. पद्मावती, कमलावती
11. मृगापुत्र, थावच्चा पुत्र, अर्निका पुत्र, चिलातीपुत्र
12. भद्रामाता-जंबूकुमार
13. कपिल-श्री देवी
14. भद्रा-जिनपाल, जिनरक्षित
15. पद्मावती-करकंडू

आगामी प्रतियोगिता :-

“गुरु भक्ति” पर 100-120 शब्दों का एक आलेख लिखना है आपको। अपनी मौलिकता विचारों के साथ प्रदर्शित करने का स्वर्णिम अवसर।

500/- के 3 श्रेष्ठ पुरस्कार

200/- के 6 सांत्वना पुरस्कार

पुरस्कार सौजन्यकर्ता :- गीता दक

नोट :- न्यूनतम तथा अधिकतम शब्द सीमा का पूर्ण ध्यान रखें। आपका लेख टाइप किया हुआ या Pdf file में ही मान्य होगा अन्यथा अमान्य कर दिया जायेगा। निर्णायक का निर्णय अंतिम होगा।

स्थानीय महिला समितियों से अनुरोध-

जैसा कि यह सर्वविदित है कि प्रबोधिनी महिला समिति का अपना मंच है। अध्यात्म, धर्म और सेवा के क्षेत्र में महिलाओं का पुरुषार्थ कदापि कमतर नहीं है। प्रबोधिनी के प्रकाशन का उद्देश्य है कि यह पुरुषार्थ पूरी दुनिया के सामने आए और संपूर्ण संघ-समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। इसके लिए सभी स्थानीय महिला समितियों से अनुरोध है कि इस मंच को सजाने के लिए अपने धर्म-ध्यान और सेवा संबंधी गतिविधियों का विवरण प्रबोधिनी की मेल आई डी पर भेजें। प्रबोधिनी का आगामी अंक अगली कार्यकारिणी बैठक के समय प्रकाशित होगा, अतः आपके क्षेत्र की गतिविधियों एवं स्वयं के कार्यों का विवरण भेज दें। कृपया निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें- 1. प्रकाशन सामग्री का विवरण अतिसंक्षिप्त अर्थात् टू द पाइंट लिख कर भेजें। 2. आगम-भक्ति, परिवारांजलि, विहार-सेवा व अन्य प्रवृत्तियों-आयामों से संबंधित जो भी फॉर्म स्थानीय समितियों द्वारा भरवाये जाएँ, उनकी संख्या की जानकारी भी प्रबोधिनी में प्रकाशन हेतु भेजें।

नोट-स्थानाभाव के कारण यदि किसी की रचना नहीं छपी है तो हम अगले अंक में प्रकाशित करने के भाव रखते हैं।

पता: श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
प्रधान कार्यालय: ‘समता भवन’, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़,
गंगाशहर, बीकानेर- 334001 (राज.) मो.- 7231033008
प्रबोधिनी पर ई-मेल भेजने हेतु :-prabodhinims@gmail.com

सम्पादक वीना नाहर

ईमेल आईडी :-veenanahtar@hotmail.com



**दीर्घ तपस्विनी
श्रीमती लताजी लोढा का
104 की तपस्या गतिमान**

दीर्घ तपस्विनी लता अभय जी लोढा, मदुरान्तकम् जिन्होंने पूर्व में भी 111 की तपस्या की तथा अन्य अनेक तपस्याएँ की। अभी भी आपके 100 की तपस्या गतिमान है। आचार्य श्री रामेश का कृपा-वर्षण आप पर सतत् बना रहे। साधुमार्गी संघ की आप आन-बान-शान हैं। आपके तप की अनुमोदना करते हुए कुछ भाव सुमन :-

ज्ञान-ध्यान में अग्रणी हो-

शील गुणों की खान!

तप-त्याग में भी अप्रमत्त हो-

साधुमार्गी संघ की आन!!

तप रश्मियों से आलोकित हो-

दोहरे शतक ने बढ़ाई शान!

“वीना” गुरु कृपा से ऊर्जस्वित हो-

“लता” तुमने तप से मिला ली है ताल!!

Premium
Quality



जितना चाहे
खाते जाएं

JAIN SAMTA

समता महिला सेवा केन्द्र

(अन्तर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

हमारे अन्य उत्पाद

जैन समता पापड़

पापड़

चने के मीठे व नमकीन
मूंग कम व तेज
हाथ के बने

खाखरा

विभिन्न स्वाद में
उपलब्ध



पापड़ व मसालों की अग्रिम बुकिंग (Advance Booking) हेतु सम्पर्क करें

शुद्ध आहार
शाकाहार

समता महिला सेवा केन्द्र, धनजीभाई का नोहरा, चांदनी चौक, रतलाम
फोन 07412-238696, मो.9407326400, 6262226400

समय - प्रातः 9 से रात्रि 8 बजे तक

शहर/ग्राम पापड़ विक्रय के लिए विक्रेता (Dealer) खुदरा विक्रेता (Retailer) नियुक्त करना है।
गृहिणियों/अन्य महिलाओं के लिए यह ऑफर (आकर्षक कमीशन) लागू है। वितरक कृपया सम्पर्क करें।